ओम् शान्ति 08-05-26 मधुबन

16 से 31 मई 2026 तक - विशेष साधना भट्ठी के लिए प्वाइंट्स

''वृत्ति परिवर्तन द्वारा साधना का वायुमण्डल बनाओ

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अपनी श्रेष्ठ वृत्तियों द्वारा दृष्टि और सृष्टि का परिवर्तन करने वाले, बाबा के नूरे रत्न सभी तीव्र पुरुषार्थी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने त्रिमासिक योग तपस्या का कार्यक्रम अपने-अपने स्थानों पर जरूर शुरू किया होगा। 1 से 15 मई तक का होमवर्क, विशेष साइलेन्स की शक्ति और उसका प्रयोग.. इस विषय की प्वाइंट्स आपको भेजी गई थी। सभी ने लक्ष्य रख इस पर अभ्यास किया होगा। जैसाकि सभी का संकल्प है कि प्रत्येक सोमवार को हम सब ''साइलेन्स डे'' के रूप में मनायें। उस दिन अन्य सेवाओं को एवाइड करते हुए मन मुख और मोबाइल का मौन रख, एकान्तवास करें। अपनी मन्सा शक्तियों द्वारा विश्व की दु:खी अशान्त आत्माओं को शान्ति की सकाश दें। प्रतिदिन प्रात: 4 से 8 बजे और सायं 6 से 10 बजे तक विशेष 8 घण्टा अपनी स्व-उन्नति के लिए समय दें। तो उसी अनुसार सभी भाई बहिनों ने जरूर ऐसी साधना शुरू की होगी।

आज आपके पास 16 से 31 मई तक के लिए विशेष प्वाइंट्स भेज रहे हैं। इसमें हम सबको अपनी सूक्ष्म वृत्तियों को एकाग्र कर, वृत्ति से दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन की सेवा करनी है। वृत्तियों की चंचलता को समाप्त करने के लिए रोज़ व्रत लेना है। व्रत अर्थात् दृढ़ता का संकल्प ही वृत्तियों को एकाग्र कर सकता है। तो सभी लक्ष्य रख अपनी सूक्ष्म वृत्तियों द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करें। इसी लक्ष्य से यह प्वाइंटस आपके पास भेज रहे हैं, जरूर सभी अटेन्शन देना जी।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति।

वृत्ति परिवर्तन द्वारा साधना का वायुमण्डल बनाओ

1) वृत्ति बहुत तीव्र राकेट से भी तेज है। अपनी सूक्ष्म वृत्तियों द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकते हो। जहाँ चाहो, जितनी आत्माओं के प्रति चाहो वृत्ति द्वारा यहाँ बैठे-बैठे पहुंच सकते हो। वृत्ति द्वारा दृष्टि और सृष्टि परिवर्तन कर सकते हो। सिर्फ वृत्ति में सर्व के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो।

2) विश्व कल्याण करने के लिए आपकी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति सदा बेहद की हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना न हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा वह दूसरे के निगेटिव को पॉजेटिव में चेंज नहीं कर सकता।

3) अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। वर्तमान समय जबकि चारों ओर मन का दु:ख और अशान्ति, मन की परेशानियां बहुत तीव्रगति से बढ़ रही हैं। तो जितना तीव्रगति से दु:ख ही लहर बढ़ रही है उतना ही आप सुख दाता के बच्चे अपने मन्सा शक्ति से, सकाश की सेवा से, वृत्ति से चारों ओर सुख की अंचली का अनुभव कराओ।

4) आप बच्चे जहाँ भी रहते हो, जो भी कर्मक्षेत्र है, आप हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, यही है बाप समान बनना। सब कुछ होते हुए, नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो।

5) जैसे स्थापना के आदि में साधन कम थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। शुरू में 14 वर्ष जो तपस्या की, उसमें बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की कोई कमी नहीं है लेकिन साधन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

6) सब आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही ''बेहद की वैराग्य वृत्ति।''

7) वर्तमान समय आप बच्चों के लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है क्योंकि ज्वाला रूप की शक्तिशाली याद ही भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि को समाप्त करेगी। यह योग की अग्नि प्रज्जवलित तब होगी जब आपकी वृत्तियों में सबके कल्याण की भावना होगी। वृत्तियाँ दूसरी सब बातों से उपराम होंगी।

8) अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो लेकिन मूल फाउण्डेशन - अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ। तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे तो न आपकी माया जायेगी, न दूसरे की जायेगी।

9) कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दु:ख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हों लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। सेवा की, सेन्टर खोले, बहुत बढ़ाया, आई.पीज भी आ गये, वी.आई.पीज भी आ गये, ये तो होता ही रहता है लेकिन सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

10)- अभी आप बच्चों को दो प्रकार के कार्य करने हैं - एक तो आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, दूसरा धरनी को भी तैयार करना है। इसके लिए विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा तब तैयार होंगे। तो वाणी और वृत्ति दोनों साथ-साथ सेवा में लगी रहें।

11) आपके बोल, कर्म और वृत्ति से हल्केपन का अनुभव हो। ऐसे नहीं, मैं तो हल्का हूँ लेकिन दूसरे मेरे को नहीं समझते, पहचानते नहीं। अगर नहीं पहचानते तो आप अपने विल पॉवर से उन्हों को भी पहचान दो। 95 परसेन्ट सबके दिलपसन्द बनो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें, इसमें सिर्फ सहन-शक्ति को धारण करने की आवश्यकता है।

12) अगर आपकी वृत्ति में श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना है तो सेकण्ड के संकल्प से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको गिफ्ट दो, खाली हाथ नहीं जाये। जितना निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है उतना ही आदि से अब तक सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि सदा नेचुरल रूप में अनुभव होगी।

13) हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो तो कभी जोश या क्रोध नहीं आयेगा। आप मास्टर स्नेह के सागर हो तो आपके नयन, चैन, वृत्ति, दृष्टि में ज़रा भी और कोई भाव नहीं आ सकता इसलिए चाहे कुछ भी हो जाये, सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करो। बेपरवाह बादशाह बनो तब आपकी श्रेष्ठ वृत्तियों से शक्तिशाली वायुमण्डल बनेगा।

14) जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा रफ़ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। तो आपकी श्रेष्ठ वृत्ति निगेटिव अथवा व्यर्थ को पॉजिटिव में बदल दे। आपका मन और बुद्धि ऐसा बन जाये जो निगेटिव टच नहीं करे, सेकण्ड में परिवर्तन हो जाये।

15) अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है नजर से निहाल, तो दृष्टि और वृति की सर्विस यह प्रैक्टिकल में लानी है। वाचा तो एक साधन है लेकिन कोई को भी सम्पूर्ण स्नेह और सम्बन्ध में लाना उसके लिए वृत्ति और दृष्टि की सर्विस हो। यह सर्विस एक स्थान पर बैठे हुए एक सेकेण्ड में अनेकों की कर सकते हो।

16) आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करेगी जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है। कैसा भी नास्तिक तमोगुणी बदला हुआ देखने में आयेगा। अब यह सर्विस करनी है, लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब वृत्ति और बातों में क्लीयर होगी। वृत्ति और दृष्टि में इतनी ताकत है, जो किसके संस्कारों को बहुत कम समय में बदल सकते हो। तो वर्तमान समय अपनी वृत्ति के सुधार से अपनी दृष्टि को दिव्य बनाओ, जब आपकी दृष्टि बदल जायेगी तब यह सृष्टि भी बदल जायेगी।